P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-I* ISSUE- VIII* November- 2016
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

डॉ0 राममविलास शर्मा का आलोचना कर्म और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का लेखन

मन्जुला शर्मा
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
टी0 डी0 बी0 कालेज,
रानीगंज, पश्चिम बंगाल

सारांश

मार्क्सवाद एक यथार्थ चिन्तन–पद्धति है। कार्लमार्क्स ने मार्क्सवादी विचारधारा का प्रवर्तन मानव–हित की भावना से प्रेरित होकर किया था। मार्क्स के वैज्ञानिक समाजवाद का प्रमुख सिद्धान्त द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद है जिसके मूल में वर्ग–संघर्ष है। मार्क्स का यह विश्वास था कि सर्वहारा वर्ग की दरिद्रता पूँजीवाद के विकास के साथ बढ़ती जाती है। साहित्य में इस विचारधारा को आधार बनाकर रचनायें की गयी। हिन्दी साहित्य के विभिन्न रचनाकारों ने इस विचारधारा को मूल में रखकर साहित्य रचना की।

डॉ0 रामविलास शर्मा की रचनायें इसी प्रकार की हैं। मार्क्सवाद को आधार बनाकर लिखी गयी रचनाओं के मूल में सामाजिक चेतना है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पर लिखे गये अपने लेखन को डॉ0 रामविलास शर्मा आज के सन्दर्भ में प्रासंगिक बताते हैं। मानवता के धर्म को सर्वोपरि स्वीकारते हुए ये जातीय संस्कृति, जातीय जागरण तथा राष्ट्र उन्मूलन के तत्व को प्रधानता देते हैं।

मुख्य शब्द : मार्क्सवाद, चिन्तन–पद्धति,साहित्य,भारतेन्दु हरिश्चन्द्र,मानव–हित

प्रस्तावना

डॉ0 रामविलास शर्मा ने मार्क्सवाद को एक विकासमान विचारधारा मानते हुए अपना साहित्य कर्म किया है। डॉ0 विश्वनाथ प्रसाद तिवारी के साथ किये गये बातचीत में इन्होंने यह स्वीकार किया कि''सच्चा मार्क्सवादी वह है जो अपनी सांस्कृतिक विरासत पहचानता है, चाहे अपनी भाषा की हो चाहे दूसरे की भाषा की हो। स्वाभाविक है कि शुरूआत अपनी भाषा से ही करेंगे।''[1]

डॉ0 शर्मा ने मानवतावादी दृष्टिवाले साहित्यकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के लिए 'भारतेन्दु–युग' (1943 ई0) एवं 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' (1953 ई0) पुस्तकों की रचना की। साथ ही 'परम्परा का मूल्यांकन' (1981 ई0) एवं अन्य रचनाओं में भारतेन्दु से सम्बन्धित आलेख मिलते हैं। 'भारतेन्दु–युग' पुस्तक का नवीन संस्करण 'भारतेन्दु युग और हिन्दी भाषा की विकास–परम्परा के नाम से 1975 ई0 में प्रकाशित हुआ, इसमें इन्होंने 200 से अधिक पृष्ठों की नयी सामग्री जोड़ी।

राजभक्त खानदान में जन्मे भारतेन्दु हरिश्चन्द्र अंग्रेंजी राज्य के सच्चे और कटु आलोचक थे। इनके नाटकों, कविताओं और निबन्धों के माध्यम से न केवल जनता को अंग्रेजी राज्य के अन्याय और शोषण के प्रति सचेत किया गया बल्कि अंग्रेंजी राज्य की सभ्यता और नेकनीयती का भी पर्दाफाश हुआ। डॉ0 शर्मा अपने 'भारतेन्दु–युग पुस्तक में उस युग के गद्य साहित्य के अध्ययन के साथ यह स्वीकार करते दिखते हैं कि ''इसमें जहाँ–तहाँ राज भक्ति का पुट है, कहीं–कहीं हिन्दुओं के पक्ष में और मुसलमानों के विपक्ष में बातें कही गयी साथ ही अनेक रचनाओं में रीतिकालीन काव्य परम्परा का भी प्रभाव है। फिर भी उसकी मूलधारा राष्ट्रीय और जनवादी है। वह राष्ट्रीय इस अर्थ में है कि उस युग के लेखक देश की स्वाधीनता चाहते थे और अंग्रेज साम्राज्यवाद की नीति का खण्डन करते थे। और जनवादी इस अर्थ में है कि वह भारतीय समाज के पुराने ढाँचे से सन्तुष्ट न होकर उसमें भी सुधार चाहता है।वह केवल राजनीतिक स्वाधीनता का साहित्य न होकर मनुष्य की एकता, समानता और भाईचारे का साहित्य है।''[2]

इसी पुस्तक के नवीन संस्करण के लिखने का कारण डॉ0 शर्मा इस प्रकार बताते हैं– 'यदि मुझे भारतेन्दु–युग से आज के युग का एक घनिष्ठ सम्बन्ध न दिखायी देता तो मैं यह पुस्तक अभी न लिखता। यह सोचकर की आज की समस्याओं को सुलझाने के लिए हमें उस युग से प्रेरणा मिल सकती है, मैंने इसे लिखना प्रारम्भ किया।''[3]

डॉ0 रामविलास शर्मा के लेखन का केन्द्र साम्राज्यवाद और भारतीय जनता के बीच का अन्तर्विरोध रहा है। भारत में अंग्रेजी राज ने अपनी क्रूरता

और शोषण को चरितार्थ किया और सन् 1957 के स्वाधीनता–संग्राम से नवजागरण का बीज देखा गया। इन्होंने अपनी पुस्तक 'महावीर प्रसाद द्विवेदी' और हिन्दी नवजागरण' में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के युग को नवजागरण की दूसरी मंजिल माना। 'भारतेन्दु–युग' पुस्तक में डॉ0 शर्मा ने यह बताया कि इस युग के लेखकों ने संगठित रूप से तत्कालीन परिस्थितियों का मुकाबला किया और सफलता प्राप्त की। इनकी नीति अंग्रेज शासकों की नीति से बिल्कुल अलग थी। अंग्रेज हिन्दी को दबाते थे, और भारतेन्दु उसके अधिकारों के लिए लड़े थे। अंग्रेज हिन्दुओं और मुसलमानों में फूट डालकर अपना राज कायम रखना चाहते थे, जिसका भारतेन्दु पर्दाफाश करते थे। इस युग का साहित्य हिन्दी–भाषी जनता का जातीय नवजागरण का साहित्य है। वे इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि भारतेन्दु–युग के लखकों ने जनता में नवचेतना फैलाने के लिए ही राजभक्ति की आड़ ली है। रेवतीरमण अपने लेख 'भारतेन्दु–युग के आलोचक डॉ0 शर्मा' में यह स्वीकार करते हैं कि ''भारतेन्दु–युग की सम्यक परिचिति डॉ0 शर्मा की लौह लेखनी से ही सम्भव हुई।''[4]

डॉ0 रामविलास शर्मा ने भारतेन्दु–युग के लेखकों की क्रान्तिकारिता का तर्कसंगत आलेख प्रस्तुत किया है। एवं इस युग के साहित्य की भरपूर सामग्री से डॉ0 शर्मा का विचारधारात्मक अध्ययन पुष्ट हुआ। आधुनिक हिन्दी–भाषा और साहित्य के आरम्भ काल के रूप में भारतेन्दु–युग का काल निर्धारण करते हुए डॉ0 रामविलास शर्मा लिखते हैं– ''भारतेन्दु ने सं0 1925 में ''कवि वचन सुधा ''का प्रकाशन आरम्भ किया था। सम्वत् 1957 में ''सरस्वती'' का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इन्ही तीस चालीस वर्षों की अवधि में भारतेन्दु–युग सीमित है। इन वर्षों में आधुनिक हिन्दी भाषा और साहित्य की नींव डाली गई।''[5]

भारतेन्दु–युग का साहित्य हिन्दी भाषी जनता का जातीय साहित्य है वह हमारे जातीय जागरण का साहित्य है। भारतेन्दु ने जातीय संस्कृति की रक्षा और विकास के लिए भाषा के महत्व को समझते हुए उसके आन्दोलन का सूत्रपात किया। डॉ0 रामविलास शर्मा ने 'भारतेन्दु–युग' पुस्तक के प्रथम लेख 'भारतेन्दु–युग और जन साहित्य' में तत्कालीन राजनीतिक सामाजिक स्थिति पर विचार किया। उस समय सम्पूर्ण हिन्दुस्तान अकाल–महँगाई, टैक्स, महामारी और बेकारी की समस्या से संत्रस्त था। भारतेन्दु ने अपने मंडल के लेखकों सहित इस विषम परिस्थिति में जनता की कठिनाइयों को समझकर उसे कजली, लावनी और पहेली जैसी जनप्रिय काव्य–विधाओं में अभिव्यक्त किया। डॉ0 शर्मा इस संदर्भ में लिखते हैं ''भारतेन्दु एक विशाल आन्दोलन के केन्द्र थे, फिर भी वह नेता की पोशाक पहनकर लोगों के सामने न आये थे। वह दूसरों को एक सहकारी की भाँति उत्साहित करते थे और अपना काम हुकुम चलाने तक न सीमित रखकर वह हर एक के कंधे से कंधा मिलाकर छोटे से छोटा काम करने का साहस रखते थे।''[6]

'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' पुस्तक में डॉ0 रामविलास शर्मा ने लिखा है''भारतेन्दु का आदेश है कि मानवता की मर्यादा ही एक सही मर्यादा है, मानवता का आग्रह ही सच्चा आग्रह है और मानवता का धर्म ही एकमात्र सच्चा धर्म है।''[7]

भारतेन्दु–युग मे नाटक, निबन्ध, उपन्यास और कविताएँ काफी मात्रा में लिखी गयीं। यह राजनीतिक सामाजिक तथा भाषा संबंधी आंदोलनों का युग होने के कारण इसका प्रत्येक लेखक एक साथ पत्रकार, सम्पादक लेखक और क्रान्तिकारी समाज–सुधारक था। डॉ0 शर्मा ने इसकी जाँच पड़ताल 'पत्र और पत्रकार' तथा 'पत्र साहित्य और प्रगति' नामक आलेख में की है। (पुस्तक–भारतेन्दु–युग)

भारतेन्दु ने 'भारत दुर्दशा', ' सत्य हरिश्चन्द्र', 'अंधेर नगरी,' 'प्रेमजोगिनी' जैसा लोकप्रिय नाटक लिखा। राधाचरण गोस्वामी का 'बूढ़े मुँह मुँहासे' तथा अन्य नाटककारों में काशीनाथ, कार्तिक प्रसाद खत्री, श्रीनिवास दास, प्रतापनारायण मिश्र रहे हैं। भारतेन्दु ने अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति हिन्दी की सेवा में लगा दी। डॉ0 शर्मा के शब्दों में ''भारतेन्दु ने क्या किया? उन्होंने कहा कि तुमने (धन ने) हमारे पूर्वजों को खाया है, मैं तुमको खाऊँगा।''[8]

भारतेन्दु युगीन गद्य शैली के शक्तिशाली विधा निबन्ध के लिए डॉ0 शर्मा कहते हैं ''उस युग के निबन्धों को एक साथ पढ़ने से एक अत्यन्त उदार और स्वाधीन चेतना की छाप पाठक के हृदय पर रह जाती है। निबन्ध को तब के लेखकों ने एक ऐसा रोचक और उपयोगी माध्यम बनाया था, जिसके द्वारा वह देश में एक नवीन मानव धर्म का प्रचार कर सकते थे।''[9]

उन्होंने कहा कि सदियों से पतित दरबारी संस्कृति में दासों सा जीवन व्यतीत करनेवाली भारतीय स्त्रियों के लिए शिक्षा की बात करना उस युग में एक उल्लेखनीय क्रान्तिकारी कदम था। साथ ही उस युग के प्रत्येक लेखक हिन्दी भाषा में लिखते हुए पर्याप्त गौरव का अनुभव करते थे।

डॉ0 रामविलास शर्मा ने अपनी जातीय संस्कृति का मंथन करते हुए उससे जीवन रस निकालने का प्रयास किया। उनकी दृष्टि में अपनी संस्कृति को भूलना अथवा उसकी अवज्ञा करना अपराध है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को उन्होनें हिन्दी साहित्य की अमूल्य धरोहर मानते हुए उनपर विस्तृत चर्चा की। भारतेन्दु के व्यक्तित्व के सन्दर्भ में डॉ0 रामविलास शर्मा अपना मन्तव्य देते हैं '' वे समाज–सुधारक थे, विधवा–विवाह के समर्थक थे, स्त्री–शिक्षा के प्रबल पक्षपाती थे। उनके विरोधियों की संख्या कम न थी। सरकारी क्षेत्रों के अलावा रूढ़िवादी समाज के ठेकेदार उनके कट्टर शत्रु थे। उन्हें दृढ़ विश्वास था कि इन शत्रुओं का महत्व कीड़ों से अधिक नहीं है। वे नष्ट हो जाएँगे, भविष्य में लोग भारतेन्दु को ही याद करेंगे।''[10] भारतेन्दु से सम्बद्ध लेखन के क्रम में डॉ0 शर्मा ने 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' की भूमिका में लिखा है ''भारतेन्दु हिन्दी की जातीय परम्परा के संस्थापक हैं, मुख्यतः उनकी बतायी हुई दिशा में चलकर ही हमारा साहित्य उन्नति कर सकेगा।''[11]

यहाँ डॉ0 राजीव सिंह द्वारा डॉ0 रामविलास शर्मा के सन्दर्भ में दिया गया वक्तव्य उनके विचारों की पुष्टि करता है–'' उनके विचार के मूल तत्व नवजागरण और

जातियता है। इसके परिप्रेक्ष्य में उनकी वैश्विक दृष्टि का आकलन करना चाहिए।''[12]

उद्देश्य

डॉ0 रामविलास शर्मा ने भारतेन्दु युग के साहित्य की बारीकियों के साथ उस युग के विभिन्न विधाओं के साहित्य–नाटक, निबन्ध, उपन्यास और कविता आदि की भी जाँच की।इन्होंने जातीय संस्कृति को अपनी आलोचना का आधार बनाते हुए नवजागरण और जातियता पर बल दिया।

उपसंहार

मार्क्सवादी चिन्तन से प्रभावित डॉ0 रामविलास शर्मा ने मार्क्सवाद को मानव संस्कृति का विकास मानते हुए साहित्य कर्म किया। ये भारतीय समाज और जातीय उन्नति के लिए प्रतिबद्ध रहे और ऐसे ही प्रतिबद्ध लेखक युगपुरूष भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के साहित्य पर इन्होंने लेखन कार्य किया। डॉ0 शर्मा ''भारतेन्दु युग'' पुस्तक में यह स्वीकार करते हैं कि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के रचनाओं की मूल धारा राष्ट्रीय और जनवादी है, साथ ही वह केवल राजनीतिक स्वाधीनता न होकर मनुष्य की एकता, समानता और भाईचारे का साहित्य है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. तिवारी विश्वनाथ प्रसाद 'रामविलास शर्मा' वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1985 पृ.1
2. शर्मा रामविलास 'भारतेन्दु युग' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा 1963 पृ. 9,10
3. शर्मा रामविलास 'भारतेन्दु युग और हिन्दी भाषा की विकास परम्परा' राजकमल प्रकाशन,दिल्ली 1975 पृ.1
4. तिवारी विश्वनाथ प्रसाद 'रामविलास शर्मा' वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1985 पृ. 44–45
5. शर्मा रामविलास 'भारतेन्दु युग' विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा 1963 पृ. 3
6. शर्मा रामविलास 'भारतेन्दु युग' विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा 1963 पृ.7
7. शर्मा रामविलास 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1966 पृ. 112
8. तिवारी विश्वनाथ प्रसाद 'रामविलास शर्मा' वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,1985 पृ. 5
9. शर्मा रामविलास 'भारतेन्दु युग' विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा 1963 पृ. 83
10. शर्मा रामविलास 'साहित्य स्थायी मूल्य और मूल्यांकन' अक्षर प्रकाशन, दिल्ली, 1968 पृ. 48–49
11. शर्मा रामविलास 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 1966 पृ. 9
12. सिंह डॉ0 राजीव प्रगतिशील आलोचना की परंपरा और डॉ0 रामविलास शर्मा, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2000 पृ. 3